अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर

कक्षा : चतुर्थ– जैनागम स्तोक वारिधि (परीक्षा 05 जनवरी, 2025)

उत्तरतालिका

प्र.1 निम्नलिखित प्रश्नों में से सही उत्तर का क्रमाक्षर कोष्ठक में लिखिए :- 15x1 = (15)

(i) संयम की रक्षा के लिए उपयोगपूर्वक की जाने वाली मन, वचन, काया की प्रवृत्ति को कहते हैं-
(क) समिति (ख) गुप्ति
(ग) समिति-गुप्ति (घ) संयम (क)

(ii) आलम्बन के भेद हैं-
(क) 2 (ख) 3
(ग) 4 (घ) 6 (ख)

(iii) साधु के लिए मेहमानों को आगे-पीछे करे तो कौनसा दोष लगता है-
(क) पूईकम्मे (ख) मीसजाए
(ग) ठवणा (घ) पाहुडियाए (घ)

(iv) सचित्त पानी से हाथ की रेखा, बाल भींगे हो, उसके हाथ से आहारादि लेवे तो कौनसा दोष लगता है-
(क) दायग (ख) लित्त
(ग) मक्खिय (घ) छड्डिय (ग)

(v) ज्ञान लब्धि का थोकड़ा भगवती सूत्र के कौनसे शतक में चलता है-
(क) 2 (ख) 8
(ग) 6 (घ) 9 (ख)

(vi) नरक गति व देव गति में कितने ज्ञान की नियमा और कितने अज्ञान की भजना होती है-
(क) 3,3 (ख) 3,2
(ग) 2,3 (घ) 4,3 (क)

(vii) रसनेन्द्रिय के लद्धिया में कितने ज्ञान और कितने अज्ञान की भजना होती है-
(क) 3,3 (ख) 4,3
(ग) 5,3 (घ) 3,2 (ख)

(viii) मनःपर्यव ज्ञान की उत्कृष्ट स्थिति होती है-
(क) एक समय (ख) देशोन करोड़ पूर्व
(ग) करोड़ पूर्व (घ) 66 सागर (ख)

(ix) नारकी अपर्याप्त आहारक में उपयोग पाये जाते हैं-
(क) 5 (ख) 8
(ग) 9 (घ) 10 (ग)

(x) तिर्यंच पर्याप्त में गुणस्थान पाये जाते हैं-
(क) 3 (ख) 5
(ग) 7 (घ) 9 (ख)

(xi) देवों में लेश्या पायी जाती है-
(क) 6 (ख) 4
(ग) 2 (घ) 3 (क)

(xii) जो जीव अभी मनुष्यगति अथवा तिर्यंच गति में है और भविष्य में देवगति में उत्पन्न होने वाले हैं,उनको कहते हैं-
(क) भव देव (ख) भव्य द्रव्य देव
(ग) भाव देव (घ) धर्म देव (ख)

(xiii) देवाधिदेव की आगति है -
(क) 82 (ख) 275
(ग) 111 (घ) 38 (घ)

(xiv) नरदेव की जघन्य स्थिति है-
(क) अन्तर्मुहूर्त (ख) 700 वर्ष
(ग) 72 वर्ष (घ) 10,000 वर्ष (ख)

(xv) पाँचवीं नरक की आगति कितनी है-
(क) 3 (ख) 4
(ग) 5 (घ) 6 (क)

प्र.2 निम्न प्रश्नों के उत्तर 'हाँ' अथवा 'नहीं' में दीजिए :- 15x1=(15)

(i) तृष्णा अथवा जिह्वा के स्वाद के लिए खुराक से कम आहार करना अप्रमाण दोष है। (नहीं)
(ii) आहार छोड़ने के 6 कारणों में प्राणियों की रक्षा के लिए आहार छोड़ना भी शामिल है। (हाँ)
(iii) पाट, चौकी आदि औघिक उपधि में आती है। (नहीं)
(iv) दूसरों को हानि पहुँचाने का विचार करना संरभ है। (हाँ)
(v) मतिज्ञानी-द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव की अपेक्षा सामान्य रूप से सर्व द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव जानता व देखता है। (हाँ)
(vi) ज्ञान के पर्याय की अल्पबहुत्व में सबसे थोड़े अवधिज्ञान के पर्याय होते हैं। (नहीं)
(vii) विभंग ज्ञान का अंतर जघन्य अन्तर्मुहूर्त, उत्कृष्ट अनन्तकाल (वनस्पतिकाल) होता है। (हाँ)
(viii) अवधिज्ञानी द्रव्य से जघन्य असंख्यात रूपी द्रव्य उत्कृष्ट सर्व रूपी द्रव्य जानता है, देखता है। (नहीं)
(ix) देवियों में जीव के भेद दो ही होते हैं। (हाँ)
(x) तिर्यंच के अपर्याप्त में अवधि ज्ञान होता है। (नहीं)
(xi) मनुष्य पर्याप्त में 10 उपयोग पाये जाते हैं। (नहीं)
(xii) नरदेव अर्थात् चक्रवर्ती की पदवी पूरे संसार अवस्थान काल में तीन बार से अधिक प्राप्त नहीं होती है। (नहीं)
(xiii) भावदेव का अन्तर जघन्य अन्तर्मुहूर्त का जो बतलाया, वह तिर्यंच पंचेन्द्रिय पर्याप्तक की अपेक्षा से समझना। (हाँ)
(xiv) नरदेवों से देवाधिदेव असंख्यात गुणा है। (नहीं)
(xv) तेउकाय की आगति 49 की लड़ी की और गति 46 तिर्यंच की होती है। (हाँ)

प्र.3 निम्नलिखित में क्रम से सही जोड़ी मिलाकर उत्तर रिक्तस्थान में लिखिए:- 10x1=(10)

(i)	औषध बतलाकर आहारादि लेना	(क) चुण्ण	मूलकम्मे
(ii)	जल पर चलना बतलाकर आहारादि लेना	(ख) श्रुत निश्रित	जोग
(iii)	अंजनादि के प्रयोग से आहारादि लेना	(ग) जोगे	चुण्ण
(iv)	बाटे बहते जीव	(घ) मूलकम्मे	गतिक
(v)	नरकादि गतियों में रहे हुए जीव	(च) गतिक	भवस्थ
(vi)	मतिज्ञान का एक भेद	(छ) भवस्थ	श्रुत निश्रित
(vii)	मनुष्य और तिर्यंच में अपर्याप्त अवस्था में नहीं होता है।	(ज) 46	विभंग ज्ञान
(viii)	धर्मदेव	(झ) विभंग ज्ञान	27 गुणों के धारक
(ix)	छोटी गतागत में तिर्यंच के भेद	(य) 49	46
(x)	छोटी गतागत में देव के भेद	(र) 27 गुणों के धारक	49

प्र.4 मुझे पहचानो :- 15x1=(15)

(i) मैं मन,वचन, काया की अशुभ प्रवृत्ति को रोककर आत्म गुणों की रक्षा करती हूँ। गुप्ति
(ii) मुझे आहार करते समय पाँच दोष लग सकते हैं। साधु
(iii) मैं उत्पादन का एक दोष हूँ, जो अपनी जाति-कुल आदि बताकर आहारादि लेने पर लगता हैं। आजीव
(iv) मैं उद्गम का एक दोष हूँ, जो बनते हुए आहारादि में साधु आया जानकर उसकी मात्रा में बढ़ोतरी कर देने पर लगता हैं। अज्झोयरए
(v) मैं ऐसा स्थान हूँ, जहाँ कोई रूपी द्रव्य नहीं है। अलोक
(vi) मैं सर्व द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव को प्रत्यक्ष जानता देखता हूँ। केवलज्ञानी
(vii) अज्ञान के पर्याय की अल्पबहुत्व में मेरे पर्याय सबसे थोड़े हैं। विभंगज्ञान

(viii) मैं मनःपर्यवज्ञान का भेद हूँ, जिससे मन के भावों को विशुद्ध एवं स्पष्ट जाना जाता है। — विपुलमति

(ix) सास्वादन गुणस्थान में मेरा उदय नहीं होता। — नरकानुपूर्वी

(x) मुझमें सास्वादन समकित नहीं होती। — नारकी अपर्याप्ता

(xi) मैं अपर्याप्त व अनाहारक अवस्था में मिलता हूँ। — बाटा बहता जीव

(xii) मैं 5 देवों में से एक देव हूँ, मेरी आगति 111 की है। — भाव देव

(xiii) मैं 5 देवों में से एक देव हूँ,मेरी उत्कृष्ट अवगाहना 1000 योजन की है। — भव्य द्रव्य देव

(xiv) मैं 5 देवों में से एक देव हूँ, मेरा अन्तर जघन्य 1 सागरोपम झाझेरा है। — नरदेव

(xv) मुझमें जीव के 111 भेदों की अपेक्षा से विवेचन किया गया है। — गतागत

प्र.5 निम्न प्रश्नों के उत्तर एक-दो वाक्यों में दीजिए- 9x2=(18)

(i) कौनसी आठ भाषाओं को छोड़कर साधु को निरवद्य भाषा बोलनी चाहिए।
1. कठोर, 2. कर्कश, 3. छेदक, 4. भेदक, 5. निश्चयात्मक, 6. सावद्य, 7. क्लेशोत्पादक और, 8. मिश्र

(ii) यतना के चार भेदों में से द्रव्य और क्षेत्र भेद को समझाइए।
द्रव्य से- षट्काय के जीवों को तथा काँटा आदि अजीव पदार्थों को देखकर चले।
क्षेत्र से- झूसरा प्रमाण अर्थात् चार हाथ सामने देखकर चले।

(iii) 'गवेषणैषणा' किसे कहते हैं ? इसके कितने भेद होते हैं ?
आहार आदि ग्रहण करने के पहले शुद्धि शुद्धि-अशुद्धि की खोज करना गवेषणैषणा है। इसके चार भेद होते हैं।

(iv) इन्द्रिय द्वार में ज्ञान, अज्ञान की भजना नियमा को समझाइए।
सइन्द्रिय और पंचेन्द्रिय में 4 ज्ञान, 3 अज्ञान की भजना। एकेन्द्रिय में 2 अज्ञान की नियमा। तीन विकलेन्द्रिय में 2 ज्ञान 2 अज्ञान की नियमा। अनिन्द्रिय में केवलज्ञान की नियमा।

(v) लब्धि द्वार के 10 भेदों के नाम क्रमशः लिखिए।
1. ज्ञान लब्धि, 2. दर्शन लब्धि, 3. चारित्र लब्धि, 4. चारित्राचारित्र लब्धि (देशविरति चारित्र), 5. दान लब्धि, 6. लाभ लब्धि, 7. भोग लब्धि, 8. उपभोग लब्धि, 9. वीर्य लब्धि, 10. इन्द्रिय लब्धि

(vi) नारकी पर्याप्त में तथा नारकी पर्याप्त आहारक में जीव के भेद, गुणस्थान, योग, उपयोग और लेश्या लिखिए।

	जीव के भेद	गुणस्थान	योग	उपयोग	लेश्या
नारकी पर्याप्त	1	4	10	9	3
नारकी पर्याप्त आहारक	1	4	10	9	3

(vii) भाव देव किसे कहते हैं ? कौनसी जाति के देव भावदेव होते हैं ?
जिन जीवों के देवगति नाम कर्म एवं देवायु का उदय हो, वे भावदेव कहलाते हैं।
भवनपति, वाणव्यंतर, ज्योतिषी, वैमानिक, ये चार जाति के देव भावदेव होते हैं।

(viii) पाँच देवों में अल्पबहुत्व द्वार समझाइए।
सबसे थोड़े नरदेव, उससे देवाधिदेव संख्यात गुणे, उससे धर्मदेव संख्यात गुणे, उससे भव्य द्रव्यदेव असंख्यात गुणे, उससे भावदेव असंख्यात गुणे हैं।

(ix) पहली नारकी के नेरिये कहाँ से आकर उत्पन्न होते हैं और नरक से निकल कर कहाँ जाते हैं ?
पहली नरक के नेरिये की आगति 11 की। यथा 5 सन्नी तिर्यंच, 5 असन्नी तिर्यंच पंचेन्द्रिय और एक संख्यात वर्षों का कर्मभूमिज मनुष्य के पर्याप्त।
गति-6 की-पाँच सन्नी तिर्यंच पंचेन्द्रिय और एक संख्यात वर्षों का कर्मभूमिज मनुष्य का पर्याप्त।

प्र.6 निम्न प्रश्नों के उत्तर दो-तीन पंक्तियों में लिखिए : - 9x3=(27)

(i) उद्गम के 16 दोषों में से आहाकम्म, उद्देसिय एवं मीसजाए दोष को समझाइए।

आहाकम्म-साधु के निमित्त छः काय का आरंभ कर बना हुआ आहार आदि लेवे तो आधाकर्मी दोष।
उद्देसिय- जिस साधु के निमित्त जो आहार आदि बनाया है, उसे वही साधु लेवे तो आधाकर्मी और अन्य साधु लेवे तो औद्देशिक दोष।
मीसजाए- गृहस्थ अपने और साधु के लिये शामिल बनाकर देवे तो मिश्रजात दोष।

(ii) उत्पादन के दोषों में से 'निमित्ते', 'आजीव' एवं 'वणीमगे'दोष को समझाइए।
निमित्ते- निमित्त ज्ञान से भूत-भविष्य-वर्तमान काल के लाभ-अलाभ, सुख-दुःख, जीवन-मरणादि बतलाकर आहार आदि लेवे तो निमित्त दोष।
आजीव- अपनी जाति-कुल आदि बताकर आहारादि लेवे तो आजीव दोष।
वणीमगे-रंक-भिखारी की तरह दीनपन से माँगकर आहारादि लेवे तो वनीपक दोष।

(iii) ग्रहणैषणा के भेदों को समझाइए।
1. द्रव्य से- योग्य कल्पनिक प्रासुक वस्तु को ग्रहण करे।
2. क्षेत्र से- दो कोस के क्षेत्र में से ग्रहण करे।
3. काल से- दिन में देखे हुए पाट-पाटलादि रात्रि को भी ग्रहण कर सकते हैं।
4. भाव से- शंकितादि दस दोष रहित ग्रहण करे।

(iv) ज्ञान और अज्ञान की पर्याय, दोनों की शामिल अल्पबहुत्व को समझाइए।
सबसे थोड़े मनःपर्यवज्ञान के पर्याय, उससे विभंगज्ञान के पर्याय अनन्तगुणा, उससे अवधिज्ञान के पर्याय के अनन्तगुणा, उससे श्रुत अज्ञान के पर्याय अनन्तगुणा, उससे श्रुतज्ञान के पर्याय विशेषाधिक, उससे मति अज्ञान के पर्याय अनन्तगुणा, उससे मतिज्ञान के पर्याय विशेषाधिक, उससे केवलज्ञान के पर्याय अनन्तगुणा।

(v) दर्शन लब्धि द्वार को समझाइए।
समुच्चय दर्शन में 5 ज्ञान, 3 अज्ञान की भजना, इसके अलद्धिया में कोई जीव नहीं। सम्यग्दर्शन के लद्धिया में 5 ज्ञान की भजना, इसके अलद्धिया में 3 अज्ञान की भजना। मिथ्या दर्शन और मिश्र दर्शन के लद्धिया में 3 अज्ञान की भजना, इन दोनों के अलद्धिया में 5 ज्ञान, 3 अज्ञान की भजना।

(vi) तिर्यंच में, तिर्यंच पर्याप्त में, तिर्यंच अपर्याप्त आहारक में जीव के भेद गुणस्थान, योग, उपयोग एवं लेश्या बताइए।

	जीव के भेद	गुणस्थान	योग	उपयोग	लेश्या
तिर्यंच में	14	5	13	9	6
तिर्यंच पर्याप्त में	7	5	12	9	6
तिर्यंच अपर्याप्त आहारक	7	3	2	6	6

(vii) नरदेव किसे कहते हैं ?
जो राजा चारों दिशाओं में छह खण्ड के स्वामी है, चक्रवर्ती हैं, जिनके पास 84 लाख हाथी, 84 लाख घोड़े, 84 लाख रथ, 96 करोड़ पैदल, 64 हजार रानियाँ है। जो 9 निधि और 14 रत्नों के स्वामी, 6 खण्ड के भोक्ता हैं। 32 हजार मुकुट-बंध राजा जिनकी आज्ञा में चलते हैं, उनको नरदेव कहते हैं।

(viii) पाँच देवों में अवगाहना द्वार को समझाइए।
भव्य द्रव्य देव की अवगाहना जघन्य अंगुल के असंख्यातवें भाग, उत्कृष्ट एक हजार योजन की। नरदेव की अवगाहना जघन्य 7 धनुष की, उत्कृष्ट 500 धनुष की। धर्मदेव की अवगाहना जघन्य दो हाथ की उत्कृष्ट 500 धनुष की। देवाधिदेव की अवगाहना जघन्य 7 हाथ की, उत्कृष्ट 500 धनुष की। भाव देव की अवगाहना जघन्य 1 हाथ की, उत्कृष्ट 7 हाथ की है।

(ix) भवनपति और वाणव्यन्तर में आगति को स्पष्ट कीजिए।
भवनपति और वाणव्यन्तर में 16 की आगति- 5 असन्नी तिर्यंच पंचेन्द्रिय, 5 सन्नी तिर्यंच, संख्यात व असंख्यात वर्षों के कर्मभूमिज मनुष्य, अकर्मभूमिज मनुष्य, अंतरद्वीप के मनुष्य, थलचर व खेचर युगलिये, इन सबका पर्याप्त।